

Çāk. 34. Daçak. in BENF. Chr. 197, 2. Çiç. 9, 40. — 3) *abziehen, abreißen*: कृत्वात्कटकाकृष्य MBh. 38, 24. आकृष्यमाणे वसने MBh. 2, 2294. *herausziehen*: कृपादाकृष्य Vet. 22, 7. कैलासादाकृष्य Dhūrtas. 93, 8. — 4) *entziehen, entreissen, abnehmen*: किंचिदाकृष्टसलिलः (देशः) Rāga-Tar. 3, 69. तस्मादाकृष्य तद्राज्यं मम शीघ्रं प्रदीयताम् MBh. 1, 6348. आकर्ष्यामि यशः BHATT. 16, 30. — 5) *entleihen*: पञ्चतन्त्राद्यान्यस्माद्भ्यादाकृष्य Hit. Pr. 8. उत्तरसूत्रादिह भाव इत्याकृष्यते Siddh. K. zu P. 3, 1, 106. — *caus. heranziehen, an sich ziehen*: वस्त्रमाकर्षयती R. 3, 11. स्वरुस्तेनाङ्गारा आकर्षिताः (vgl. u. समा) Pañkāt. 32, 17. — Vgl. आकर्ष्य fgg., आकर्षिन्, आकर्षि. — *अप्रा अभziehen, abwenden, entfernen*: न हि तस्मान्मनः काश्चिच्चतुषो वा नरोत्तमात् । नरः शक्नोत्यपाक्रष्टुम् R. 2, 17, 9. तमशक्यमपाक्रष्टुं निर्देशातिपतुः Ragh. 12, 17. अथ मे देव संनोक्तमपाक्रष्टुं त्वमर्हसि Buāg. P. 3, 23, 10. — *व्याप्रा अभziehen, abreißen*: ततो दुःशासना राजनैर्द्रौपद्या वसनं बलात् । सभामध्ये समातिप्य व्यापाक्रष्टुं प्रचक्रमे MBh. 2, 2290. — *पर्याप्रा herumziehen, herumschleppen*: द्रौपदी च सभामध्ये — पर्याकृष्टा MBh. 18, 9.

— *व्याप्रा अभziehen, ablegen, abwerfen*: स्रस्तव्याकृष्टवसनाः R. 5, 54, 15. *entfernen, trennen* Prab. 37, 7.

— *समाप्रा heranziehen, an sich ziehen*: समाकृष्टा ह्येते — स्वरुस्तेनाङ्गाराः (vgl. u. आ) Amar. 76. समाकृष्य तु तं सुतम् । विशस्य चैनम् MBh. 3, 10494. *herausziehen*: तुरभाण्डात्तुरमेकं समाकृष्य Pañkāt. 40, 16. — *caus. mit sich fortziehen*: सा (समुद्रवेला) मत्तगजिन्द्रानपि समाकर्षयति Pañkāt. 74, 23.

— *उद् 1) in die Höhe ziehen, — bringen* (in übertr. Bed.); *pass. einen Aufschwung nehmen, die Oberhand bekommen*: उत्कर्षति क्व वै ज्ञानसंततिम् Mānd. Up. 10. कलावधर्म उत्कृष्यमाणे Buāg. P. 5, 6, 10. उत्कृष्ट गेष्टेगर्त, ausserordentlich: उत्कृष्टवलपौरुष R. 3, 41, 5. जिह्वलौल्योत्कृष्टैरमुखात् Pañkāt. 62, 3. *heftig, stark*, von einem Laute: महानादैरुत्कृष्टतलनादितैः MBh. 1, 7650. 8020. उत्कृष्टनिन्द 4, 355. Andere Belege für das partic. s. u. उत्कृष्ट. — 2) *herausziehen, herausnehmen, fortlassen*: यदा च वः — उत्कर्षति जलात्तस्मात्स्थलम् MBh. 1, 7869. 7850. उत्कृष्टे गौः = पङ्कडुद्धतः P. 2, 1, 61, Sch. अङ्गदकोटिलम् । प्रालम्बमुत्कृष्य Ragh. 6, 14. वनस्पतिप्रभृतीन्यङ्गान्युत्कृष्येरन् Çāñkh. Çr. 15, 1, 27. उत्कृष्टस्नेहः Suçr. 1, 180, 1. *ausziehen* (ein Kleid): वस्त्रमुत्कर्षति मयि MBh. 2, 1810. उत्कर्षत्याश्च वसनम् R. 5, 36, 37. Vgl. उत्कर्षण, wo im ersten Beispiele das Ausziehen des Kleides gemeint ist. — 3) *spannen, vom Bogen*: उत्कर्षति धनुःश्रेष्ठम् MBh. 4, 1635. *auseinanderziehen*: द्युलुलोत्कर्षम् (absolut.), द्युलुल उत्कर्षम् oder द्युलुलेनोत्कर्षं खण्डिकां हिनति P. 3, 4, 51, Sch. — *caus. in die Höhe bringen, heben, steigern* (Gegens. अपकर्षय) Śāh. D. 7, 21. — Vgl. उत्कर्ष fgg.

— *अप्राद् abtrennen*: मूलानि च प्राप्तानि चापात्कृष्य Kauç. 90.

— *समुद् in die Höhe ziehen, — bringen*: वायुः समुत्कर्षति गर्भयानि-मृतां रेतः पुष्परसानुपृक्तम् MBh. 1, 3613.

— *उप 1) heranziehen, zu sich ziehen* Suçr. 2, 345, 11. पापयुपकर्षम्, पाणावुपकर्षम् oder पाणिनोपकर्षं धानाः संगृह्णाति P. 3, 4, 49, Sch. उप-कर्षं विभो प्रयत्नम् Buāg. P. 7, 9, 22. — 2) *entfernen, fahren lassen*: दमयत्यां विशङ्का तामुपाकर्षत् MBh. 3, 2996 = N. 24, 36, wo die richtige Lesart व्यापाकर्षत् sich findet.

II. Theil.

— *समुप heranziehen*: नावः समुपकर्षधं तारयिष्याम वाहिनीम् R. 2, 89, 10.

— *नि hinabziehen* (?): यः संस्थितः पुरुषो दृश्यते वा निखन्यते वापि नि-कृष्यते वा (oder wird von der Strömung hinabgezogen ?) MBh. 1, 3616. West.: *dilacerare* (?). Die Bed. *niederziehen* hat das Wort wohl an folg. Stellen: सकृन्निकर्ष्यन्कृति Çat. Br. 12, 3, 1, 8. निकर्षिष्यते, निकर्षमाणाय. निकर्षिताय TS. 7, 1, 19, 3. — *partic. निकृष्ट 1) niedrig stehend, verachtet, gemein* AK. 3, 2, 3. 3, 4, 29, 227. H. 1442. सुनिकृष्टा च ते योनिः MBh. 1, 3067. सर्वे राज्ञो मैथिलस्य मैनाकस्येव पर्वताः । निकृष्टभूता राजानो व-त्सा ह्यनुकरो यथा ॥ 3, 10655. निकृष्टजातः MBh. 127, 13. निकृष्टाशयत-या Daçak. in BENF. Chr. 196, 7. Vedāntas. ebend. 203, 3. — 2) *nahe, n. Nähe* H. 1451. नातिदूरे निकृष्टे वा Suçr. 1, 94, 4. Vgl. u. संनि.

— *संनि, partic. संनिकृष्ट 1) zusammengezogen* in die Nähe gebracht, nahe stehend, nahe bevorstehend, nahe; n. Nähe AK. 3, 2, 16. संनिकृष्ट-विकृष्टकर्षिकः Suçr. 2, 199, 21. संनिकृष्टानिमान्सर्वाननुमद्य द्विजर्ष-भान् R. 2, 2, 8. संनिकृष्टं च यत्र स्यादिध्मपुष्पपालोदकम् 3, 21, 5. Megh. 74. संनिकृष्टश्च नो वीर जयः शत्रोः पराजयः R. 3, 30, 8. आसनसंनिकृष्टम् adv. in der Nähe des Sitzes Kumāras. 3, 2. संनिकृष्टे Suçr. 1, 94, 5. आग्रमसंनि-कृष्टे स्थिताः स्मः Çāk. 23, 23. — Vgl. संनिकर्ष.

— *निस् 1) herausziehen* Çat. Br. 4, 5, 2, 10. ततः सत्यवतः कायात् — अङ्गुष्ठमात्रं पुरुषं निश्कर्षय यमो बलात् MBh. 3, 16763. इषीकां च यथा मु-ञ्जात्काश्चिन्निकृष्य दर्शयेत् 14, 533. 1, 4327. तस्य निष्कृष्यमाणस्य सायका-स्य R. 4, 22, 22. निकृष्टास्त्रः Suçr. 2, 433, 11. जिह्वां निःकृष्य 486, 18. वक्त्रं यथा दारुणि — निष्कर्षति गूलम् Buāg. P. 6, 4, 27. निष्कृष्टमर्थं चकमे कु-वेरात् Ragh. 3, 26. — 2) *zerreißen*: तममुत्र निरये वर्तमानं वज्रकाण्टका-त्मलीमोरोप्य निष्कर्षति Buāg. P. 5, 26, 21. — *caus. zerreißen, zerstören, zu Grunde richten*: कालचक्रं धमिस्तीक्ष्णं सर्वं निष्कर्षयज्जगत् Buāg. P. 6, 5, 19.

— *परा 1) fortziehen*: स तौ पराकृष्य सभासमीयमानीय MBh. 2, 2227. — 2) *herabziehen, schmähen*: ब्राह्मणा यं प्रशंसन्ति पुरुषः स प्रवर्धते । ब्राह्मणैर्यः पराकृष्टः परभूयात्तन्नादि सः ॥ MBh. 13, 2103.

— *परि 1) herumziehen, herumschleppen*: श्यापदाः परिकर्षतु नराश्च नि-कृत्वात्मया R. 2, 97, 30. द्रौपदीं परिकर्षद्भिः MBh. 3, 1940. 536. 4, 457. Draup. 5, 21. R. 5, 49, 18. 6, 8, 25. मुहूर्तं तौ तदान्योऽन्यं समरे पर्यकर्षताम् MBh. 1, 7111. शुनः स परिकर्षतु 13, 4515. इत्येतत्तत्तश्चैनं कृतातः परिकर्षति R. 2, 105, 13. रागाभिभूतः पुरुषः कामेन परिकृष्यते MBh. 3, 80. 13, 2609. med.: कुरुवीरमध्ये रजस्वलां यत्परिकर्षसे माम् 2, 2235. mit recipr. Bed. 4, 764. — 2) *anführen* (ein Heer): यो ऽसौ शतसङ्ख्याणि सङ्घं परिकर्षति R. 6, 2, 28. — 3) *in sich herumgehen lassen, beständig an Etwas denken*: स्थाने ऽस्मिन् (स्वर्गे) वस राजेन्द्र कर्मभिर्निर्जितैः शुभैः । किं त्वं मानुष्यकं स्ने-हमद्यापि परिकर्षसि ॥ MBh. 17, 104. — *caus. Jmd hinundherzerren, mitnehmen, peinigen*: घनावृष्ट्या तथा राजा स तदा परिकर्षितः R. 1, 8, 13. नाविन्दतार्तिं परिकर्षितापि (परिकर्षिता?) Buāg. P. 4, 23, 20.

— *प्र 1) hervorziehen, vorstrecken*: दत्तिणं पादं प्रथमं प्रकर्षति Kauç. 90. *vorwärts ziehen, fortziehen*: स तैः प्रकृष्यताकृष्यत च R. 5, 61, 19. वेगेन महता नावं प्राकर्ष्यलवणाम्भसि MBh. 3, 12787. तावन्त्योऽन्यं समा-क्षिप्य प्रकर्षतौ परस्परम् 4, 755. स्थानादप्योन्ने कृपितः प्रकर्षेत् R. 3, 43, 42. दशयीवम् — दिशं याम्यो प्रकर्षति 5, 27, 17. 2, 69, 16. प्रकृष्टाश्च यथा-